झारखण्ड राज्य के धनबाद जिले में उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन : एक अध्ययन (2000 ई0 से 2023 ई0 तक)

पीएच.डी. पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबंध का सार

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल, विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखण्ड)

2023

शोध निदेशकः

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग,
सिंदरी कॉलेज सिंदरी
धनबाद (झारखण्ड)

शोधार्थीः–

दुलाल गोप
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल
विश्वविद्यालय, धनबाद झारखण्ड।

झारखण्ड राज्य के धनबाद जिले में उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन : एक अध्ययन (2000 ई0 से 2023 ई0 तक)

भूमिका (**Introduction**):

ऐतिहासिक अनुसंधान ऐतिहासिक घटनाओं, लोगों, समाजों और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं के विकास की गहरी समझ हासिल करने के लिए अतीत की जाँच और विश्लेषण करने की एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है। यह सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान का एक मूलभूत घटक है, जो हमें मानव इतिहास की जटिलताओं और स्वरूपों की गहन समझ विकसित करने में सक्षम बनाता है। यह ऐतिहासिक घटनाओं के कारणों और परिणामों पर अंतदृष्टि प्रदान करता है और हमारे अतीत की घटनाओं की विश्लेषण कर और वर्तमान पर इसके प्रभाव के प्रति व्यापक समझ विकसित में योगदान देता है, (गे, 1981 432) वास्तविक ऐतिहासिक अनुसंधान या इतिहासलेखन, ऐतिहासिक घटनाओं के अथों का विश्लेषण और व्याख्या करने से संबधित है। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक शोधकर्त्ता वर्तमान में अवलोकन के लिए उपलब्ध वस्तुओं का अध्ययन करके अतीत में किसी घटना की संभावित सच्चाई के निष्कर्ष पर पहुँचने में सक्षम होता है'' (गोल्डर, 1972 1998)। इतिहास में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन और ऐतिहासिक शोध महत्वपूर्ण स्थान रखते है। सामाजिक–आर्थिक कारक अक्सर ऐतिहासिक घटनाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इतिहास में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन की जाँच करने से हमे यह पता लगाने और समझने में मदद मिलती है कि समय के साथ किसी समाज की दशा एवं दिशा किस प्रकार की रही है। यह हमें मानव विकास, तकनीकी प्रगति और सामाजिक विकास की गतिशीलता के विविध आयामों को समझने में मदद करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इतिहास में सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन पर ऐतिहासिक शोध अतीत को समझने वर्तमान को सूचित करने और भविष्य को आकार देने के लिए महत्वपूर्ण है।

उरांव जनजाति झारखण्ड के प्रमुख जनजातीय समुदायों में से एक है जो अपनी समृद्ध आदिवासी सांस्कृतिक और विरासत के लिए जाना जाता है। यह झारखण्ड की दूसरी प्रमुख

जानजाति है। उरांव परम्परा से मिले संकेतो के अनुसार इनका मूल निवास स्थान दक्कन रहा है। जिसे कुछ ने कोंकण बताया है। उरांव भाषा एवं प्रजाति दोनों दृष्टि से द्रविड़ जाति के हैं। दक्षिणी छोटानागपुर और पलामू प्रमण्डल उरांवो का गढ़ है। इन दोनों प्रमण्डलों में ही लगभग 90 प्रतिशत उरांव निवास करते हैं जबकि शेष 10 प्रतिशत उत्तरी छोटानागपुर, संथाल परगना एवं कोल्हान प्रमण्डल में निवास करते हैं यह जनजाति करीब 14 प्रमुख गोत्रों में विभाजित हैं। ये हैं– लकड़ा, रूंडा, गारी, तिर्की, किस्पोट्टा, टोप्पो, एक्का, लिंडा, मिंज, कुजुर, बांडी, बेक, खलखो और केरकेट्टा। यह जनजाति समुदाय अपने विशिष्ट रीति–रिवाज, परंपराओं और जीवंत लोक संस्कृति के लिए पहचानें जाते हैं। धनबाद झारखण्ड का एक ऐसा जिला जो अपने समृद्ध खनिज संसाधनों, विशेषकर कोयले के लिए जाना जाता है। यहाँ आदिवासी समुदायों की अच्छी–खासी आबादी है, जिनमें उरांव जनजाति भी शामिल है। ज्ञात हो कि जनगणना 2011 के अनुसार धनबाद जिले के कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति समुदाय का हिस्सा 8.7 प्रतिशत है। संथाल, महली एवं मुण्डा के बाद उरांव धनबाद जिले में सर्वाधिक जनसंख्या वाला जनजाति समुदाय है। जिसकी कुल आबादी 5176 है। इसमें 2676 पुरूष एवं 2500 महिलाऐं हैं। कुल आबादी में 927 लोग ग्रामीणों क्षेत्रों में जबकि 4249 लोग शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं। **(जनगणना, 2011)**

भारत में, विशेषकर झारखण्ड राज्य में जनजातीय समुदायों का अध्ययन कई कारणों से अत्यंत महत्पूर्ण है। जनजातीय समुदाय अद्धितीय सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करते हुए, समाज के एक महत्वपूर्ण हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। झारखण्ड में आदिवासी समुदायों पर अध्ययन न केवल सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संरक्षण का मामला हैं, बल्कि सामाजिक असमानताओं को दूर करने, हाशिए पर रहने वाली आबादी को सशक्त बनाने और स्वदेशी ज्ञान और प्रथाओं के संरक्षण को सुनिश्चित करते हुए सतत विकास को बढ़ाने का एक प्रभावी विकल्प भी है। अतः यही कारण है कि वर्तमान शोध में अध्ययन का विषय ''धनबाद जिले के उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का एक ऐतिहासिक अध्ययन (2000 ई0 से 2023 ई0 तक) है। यह एक ऐतिहासिक शोध प्रकार है, क्योंकि इसमें निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति के भीतर सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों व्यवस्थित जाँच और व्याख्या शामिल है। इस शोध में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन करने के लिए

प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ो, तथ्यों एवं सूचनाओं को सम्मिलित किया जाएगा।

संबंधित साहित्य की समीक्षा (REVIEW OF LITERATURE):

ऐतिहासिक शोध में साहित्य समीक्षा बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि यह अध्ययन के लिए एक आधार प्रदान करती है। यह संबंधित क्षेत्र में मौजूदा अध्ययन, अध्ययन की कार्यप्रणाली, ज्ञान में अंतराल एवं शोध परिसीमन पर व्यापक दृष्टिकोण पेश करती है। यह शोधकर्त्ताओं को प्रासंगिक स्त्रोतों, सैद्धांतिक रूप रेखाओं और ऐतिहासिक बहसों की पहचान करने, शोध प्रश्नों के निमार्ण का मार्गदर्शन करने और अध्ययन की प्रकृति और विश्वासनीयता को निर्धारित करने में सहायता करता है।

(मजुमदार, 1944, 299) की पुस्तक, 'रेसेस एण्ड कल्चर ऑफ इंडिया' भारत की विभिन्न जनजातीय समुदाय एवं इसकी संस्कृति को समझने की एक संदर्भित स्त्रोत है। **(दास, 2018, 31)** ने अपने एक शोध पत्र 'समकालीन भारत में आदिवासी पहचान और आजीविका' में दो अत्यंत महत्वपूर्ण साहित्य 'भारतीय संदर्भ में जनजाति पर पुनर्विचारः वास्तविकताएँ, मुद्दे और चुनौतियाँ' एवं भारत में आदिवासीः संसाधन, आजीविका और संस्थाएँ' पर अलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत किया है। **(दास एवं दास, 2014, 14)** ने 'रीथिंकिंग ट्राईब इन इंडियन कॉन्टेक्स्टः रियलिटीज, इश्यूज एण्ड चैलेंजेस' शीर्षक नाम से एक पुस्तक का संपादन किया है जो वर्तमान समय में भारत के जनजातीय समुदाय से जुड़ी विभिन्न आयामों पर केन्द्रीत दर्जनों शोधकर्ताओं के शोधपत्रों एवं आलेखों का संकलन किया है। यह पुस्तक जनजातीय समुदाय के क्षेत्र में हो रहें नवीन अनुसंधानों पर समझ विकसित करने का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। **(गुप्ता एवं अन्य 2019, 01)** ने पूर्वी गोदावरी जिले, आंध्र प्रदेश में आदिवासी समुदायों की सामाजिक–जनसांख्यिकीय और सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर एक अध्ययन किया है। इस अध्ययन में शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग कर जनजातीय समुदाय में जनसंख्या एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अपने एक शाेध कार्य में एथनिसिटी, रिलिजन, एण्ड आईडेंटिटी पॉलिटिक्स अमोंग ट्राईब्स इन झारखण्ड' में **(कुमार एवं अन्य, 2018, 23)** ने झारखण्ड के आदिवासियों के बीच जातीय, धार्मिक और राजनीतिक विभाजन

के अंतर्निहित कारणों की जाँच कर विभिन्न पक्षों की विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। (पुरकायस्थ, 2018, 7) ने जनजाति निर्माण में असम के बराक घाटी क्षेत्र में उरांव जनजाति पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया। इसके अंतर्गत शोधकर्त्ता ने उरांव जनजाति समुदाय के सामाजिक, आर्थिक स्थिति की विस्तृत चंचा की है। एक अन्य में शोधकर्त्ता (दासगुप्ता, 2022, 1375) ने छोटानागपुर के उरांव जनजाति समुदाय के उन्नींसवी सदी के औपनिवेशिक प्रतिनिधित्व की पड़ताल करता है।

शोध समस्या का अन्वेषण (Problem to be investigated):

- इस शोध में निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के पूर्व धनबाद जिले के उरांव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिर्वतन की जाँच की जाएगी। इसके अन्तर्गत मुख्य आर्थिक, क्रियाकलाप, आय एवं स्त्रोत, रोजगार, में स्थिति, समाज का स्वरूप, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य, अन्य जनजातियों के साथ सहसंबंध एवं तुलनात्मक स्थिति, शिक्ष एवं स्वास्थ की स्थिति राजनितिक सक्रियता, प्रशासन के क्षेत्र में भागीदारी आदि के परिप्रेक्ष्य में यह शोध आवश्यक है।
- इस शोध में निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति की सामाजिक परिवर्तन का आंकलन किया जाएगा। इसके अंतर्गत समाज का स्वरूप, सामाजिक मूल्य, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति, राजनितिक सक्रियता, प्रशासन के क्षेत्र में भागीदारी आदि के अध्ययन के लिए यह शोध आवश्यक है।
- इस शोध में निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति की आर्थिक परिवर्तन का आंकलन किया जाएगा। इसके अन्तर्गत मुख्य आर्थिक क्रियाकलाप, आय के स्त्रोत, रोजगार में स्थिति का अध्ययन किया जाएगा।
- इस शोध में निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति के सांस्कृतिक परिवर्तन का आंकलन किया जाएगा। इसके अन्तर्गत सांस्कृतिक मूल्य, खान–पान, पहनावा, सांस्कृतिक उत्सवों के मनाने के तरीके भाषा आदि में आए परिवर्तन का अध्ययन किया जाएगा।

- इस शोध में निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की स्थिति का अन्य जनजातियों से तुलानात्मक अध्ययन किया जाएगा।
- प्रस्तावित शोध में अध्ययन क्षेत्र के उरांव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की दशा एवं दिशा को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण कर भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करने के लिए यह शोध आवश्यक है।

शोध कार्य का उद्देश्य (**Objective of the Research**):–

- निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के पूर्व धनबाद जिले के उरांव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति की जाँच करना। इसके अंतर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक विशेषताओं, शिक्षा, स्वास्थ एवं रोजगार की स्थिति, राजनीति एवं प्रशासनिक क्षेत्र में भागीदारी का अध्ययन सम्मिलित है।
- निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति की सामाजिक परिर्वतन का आंकलन करना। इसके अन्तर्गत समाज का स्वरूप, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य जनजाति शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति, राजनितिक सक्रियता प्रशासन के क्षेत्र में भागीदारी आदि का वर्तमान स्थिति का अध्ययन सम्मिलित होगा।
- निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति की आर्थिक पविर्तन का आंकलन करना। इसके अन्तर्गत मुख्य आर्थिक क्रियाकलापों, आय के स्त्रोत, रोजगार में स्थिति का अध्ययन किया जाएगा।
- इस शोध में निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति के सांस्कृतिक परिर्वतन का आंकलन करना। इसके अन्तर्गत सांस्कृतिक मूल्य, खान–पान, पहनावा, सांस्कृतिक उत्सवों के मनाने के तरीके, भाषा आदि में आए परिर्वतन का अध्ययन किया जाएगा।

- निर्दिष्ट अवधि (2000ई0–2023ई0) के मध्य धनबाद जिले के उरांव जनजाति समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिर्वन की स्थिति का अन्य जनजातियों से तुलनात्मक अध्ययन करना।
- अध्ययन क्षेत्र के उरांव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिर्वन की दशा एवं दिशा को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्वलेषण कर भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

<u>शोध प्रश्न (**Research Questions**):</u>

- वर्ष 2000 ई0 के पूर्व धनबाद जिले के उरांव जनजाति की सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति कैसी थी?
- वर्ष 2000 ई0 के बाद अध्ययन क्षेत्र के उरांव जनजाति की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन का स्वरूप एवं दिशा क्या है?
- वर्ष 2000 ई0 के बाद अध्ययन क्षेत्र के उरांव जनजाति की आर्थिक स्थिति में क्या परिवर्तन हुआ है?
- वर्ष 2000 ई0 के बाद अध्ययन क्षेत्र के उरांव जनजाति की सांस्कृति में क्या परिवर्तन आया है?
- वर्ष 2000 ई0 के बाद अध्ययन क्षेत्र के उरांव जनजाति एवं अन्य जनजातियों से सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन कैसे समरूप एवं भिन्न है?
- वर्ष 2000 ई0 के बाद अध्ययन क्षेत्र के उरांव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं सास्कृतिक परिवर्तन की दशा एवं दिशा को प्रभावित करने वाले कारक कौन–कौन से हैं?

<u>शोध प्रविधि (**Research Methodology**):</u>

प्रस्तुत शोध एक ऐतिहासिक शोध होगा। इस शोध में शोध की विधि ऐतिहासिक सर्वेक्षण, विश्लेषणात्मक, एवं तुलनात्मक है। सर्वेक्षण एक अत्यंत प्रभावी शोध विधि है जो ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक परिवर्तनों और मानवीय अनुभवों के बारे में अंतदृष्टि को उजागर करने

के लिए इतिहासकारों को आंकड़ा एकत्र करने, विश्लेषण करने और व्याख्या करने में मदद करता है। (बर्ग, 2001, 210)। इस शोध में अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग लाया जाएगा। अध्ययन में प्रयुक्त प्राथमिक आंकड़े स्वयं के द्वारा तैयार प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त किये जायेंगे। प्राथमिक आंकड़े में अभिलेखगार, सरकारी कार्यालयों या पुस्तकालयों में संग्रहीत दस्तावेज, भूमि रिकॉर्ड, कर आकलन जनगणना संबंधि आकंड़ा और अधिकारिक प्रतिवेदन शामिल है। इस शोध में द्वितीयक प्रकार की सूचनाऐं अन्य लेखको के आलोख, शोधकर्ताओं के शोधपत्र, सामाचार पत्रों में प्रकाशित आलेख, डिजिटल सूचना तंत्र में मौजूद सूचनाऐं, शोध प्रबंध एवं लघु शोध प्रबंध संदर्भित, संपादित एवं पाठ्य–पुस्तकों, फिल्म एवं डॉक्यूमेन्ट्री, मोनाग्राफ, पुस्तकालयों (जैसे–केन्द्रीय पुस्तकालय, राँची, राजकीयकृत पुस्तकालय, राँची एवं धनबाद रामदयाल मुण्डा सांस्कृतिक शोध संस्थान राँची आदि) में उपलब्ध विभिन्न पुस्तकों शोध ग्रंथों आदि के अध्ययन एवं समीक्षा से प्राप्त किये जायेंगे। चुकी यह एक विश्लेषात्मक शोध है। इसलिए आंकड़ो के विश्लेषण के लिए मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध कार्य की प्रासंगिकता (**Significance of Proposed Work**):

इस अध्ययन का महत्व व्यक्ति और समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन को समझने और उनकी पूर्वानुमानिक प्रभावों को शांतिपूर्ण, उपयुक्त और विवेकपूर्ण रूप से अध्ययन करने में है। धनबाद जिले के उरांव जनजाति का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिर्वतन के विविध आयामों जैसे–साक्षरता, आय, निवास, स्वास्थ्य, और सांस्कृतिक परिर्वतन आदि के अध्यन से एक ओर निदृष्ट अवधि के पूर्व की स्थिति में मदद मिलेगा वहीं दूसरी ओर 2000 ई0 से 2023 ई0 तक की अवधि के मध्य की स्थिति में समझने में सहायता मिलेगी। साथ ही 2000 ई0 से 2023 ई0 तक की अवधि के दौरान उन सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, तकनीकी एवं पर्यावरणीय कारकों को समझना संभव होगा जो जनजाति समुदाय के जीवन को गहरे रूप में प्रभावित किया है। इस अध्ययन के माध्यम से हम समझ सकते हैं कि कैसे ये परिर्वतन उनकी आर्थिक और सामाजिक जीवनशैली पर प्रभाव डाले हैं, और

इससे कैसे उनकी विकास प्रक्रिया को बदल दिया है। साथ ही इस शोद्य के माध्यम से सरकारों और सामाजिक संगठनों को नीति निर्माताओं को समुदाय के हित सुझाव प्रस्तुत कर इनके बेहतर जीवन के लिए सुझाव दिया जा सकता है।

शोध सीमांकन एवं भविष्यगत कार्य (**Research limitation and future work**):

इस अध्ययन का लक्ष्य वर्ष 2000 ई0 से 2023 ई0 तक के धनबाद जिले के उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिर्वतन को व्यापक रूप से अध्ययन करना है, जिसमें स्थानीय इतिहास, संगठन, सांस्कृतिक बदलाव और आर्थिक घटनाओं का विशेष महत्व होगा। शोध से संबंधित आंकड़े चयनित क्षेत्रों एवं स्त्रातों से प्राप्त कर उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक, एवं सांस्कृतिक परिर्वतन के स्वरूप, कारण और प्रभावों का आंकलन किया जाएगा। भविष्य में शोधकर्ता विभिन्न क्षेत्रों और समय अवधि में जनजातियों के बीच सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिर्वन के ऐतिहासिक अध्ययन से संबंधित कई अन्य पक्षों पर अध्ययन कर सकते है। जैसे–किसी निदृष्टि अवधि में झारखण्ड के आदिम जनजाति में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिर्वतन का ऐतिहासिक अध्ययन। इसी प्रकार दो प्रदेशो में रहने वाले किसी एक जनजाति (जैसे–संथाल) के बीच आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का ऐतिहासिक विश्लेषण। इसी प्रकार सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का जनजातीय समुदाय पर प्रभाव का ऐतिहासिक अध्ययन किया जा सकता है।

संभावित अध्यायीकरण (**Tentative Chaptersation**):

प्रस्तावित शोध में कुल छः अध्याय होंगे।

भूमिका

- अध्याय 1:– उरांव जनजाति के सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति (वर्ष 2000ई0 के पूर्व)

- अध्याय 2:– उरांव जनजाति के सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप एवं दिशा (वर्ष 2000ई0 से 2023 ई0)
- अध्याय 3:– उरांव जनजाति के आर्थिक परिवर्तन का आंकलन (वर्ष 2000ई0 से 2023 ई0)
- अध्याय 4:– उरांव जनजाति के सांस्कृतिक परिवर्तन (वर्ष 2000ई0 से 2023 ई0)
- अध्याय 5:– उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का अन्य जनजातियों से तुलनात्मक अध्ययन।
- अध्याय 6:– उरांव जनजाति के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक एवं इसका प्रभाव।

उपसंहार

ग्रन्थ सूची

संदर्भ सूची (**References**):

1. मजुमदार, डी. (1944). *रेसेस एण्ड कल्चर ऑफ इंडिया,* किताबिस्तान, अल्लाहाबाद, पृष्ठ–299
2. गे, एल.आर. (1981). *'एजेकेशनल रिसर्चः कॉम्पीटेंसी फॉर एनालिसिस एंड एप्लीकेशन',* दूसरा संस्करण, कोलंबस, ओएचः चार्ल्स ई. मेरिल, पृष्ठः 432.
3. गोल्डहोर हर्बर्ट (1972). *'इंट्रोडक्शन टू साइंटिफिक रिसर्च',* अर्बाना, आईएलः इलिनोइस विश्वविद्यालय, ग्रेजुएट स्कूल ऑफ लाईब्रेरी साइंस, पृष्ठ–98
4. भारत के रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय, 'जनसंख्या जनगणना 2011' *तालिका एसटी–14ः धार्मिक समुदाय के अनुसार अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या (जिला स्तर),* झारखण्ड जिला–धनबाद–2011
5. दास.बी. (2018). *'समकालीन भारत में आदिवासी पहचान और आजीविका'* इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, वॉल्यूम–53, इशू–30 पृष्ठः 31–34
6. दास. बी. के. एवं दास, आर. के. (2014). *'रिथिंकिंग ट्राईब इन इंडियन कॉन्टेक्स्टः रियलिटीज, इश्यूज एण्ड चैलेंजेस,* रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृष्ठ–14

7. गुड्डा, एस.एवं अन्य (2019), 'पूर्वी गोदावरी जिले, आंध्र प्रदेश में आदिवासी समुदायों की सामाजिक–जनसंख्यिकीय और सामाजिक– आर्थिक प्रोफाईल' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ, वॉल्यूम–6, इशू–06, पृष्ठ–01.
8. कुमार, ए. एवं अन्य (2018) *'एथनिसिटी, रिलिजन, एंड आईडेंटिटी पॉलिटिक्स अमोंग ट्राईब्स इन झारखण्ड,* इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, वॉल्यूम–53, पृष्ठः 23–25
9. परकायस्थ, एन (2018) *'जनजाति निर्माण में: असम के बराक घाटी क्षेत्र में ओरांव जनजाति पर एक अध्ययन',* ग्लोबल जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी सोशल साइंसेज, वॉल्यूम–07, ईशू–01, पृष्ठः 7–12
10. बर्ग, बी.एल. (2001) *'हिस्ट्रोग्राफी एंड ओरल ट्रेडिशन'* कांटिटेटिव मेथोड्स इन सोशल साइंसेज, एमएः एलिन और बेकन, पृष्ठ 210–224।
11. दासगुप्ता, एस. (2022). *'उरांव ऑफ छोटानागपुर अजर्नी थ्रू कोलोनियल इथनोग्राफी'* मॉडर्न एशियन स्टडी, वॉल्यूम–56, इशू–5, पृष्ठ 1375–1415